International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मन्नू भंडारी कृत 'एक प्लेट सैलाब' कहानी संग्रह में चित्रित नारी

अमित चहल
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध सार – मानव चाहे किसी भी जाति धर्म वर्ग अथवा कार्यक्षेत्र से संबंद्ध हो वह अपने पारिवारिक जीवन, वंशगत संस्कारों तथा सामाजिक, संस्कृति परिवेश से निर्मित और नियमित होता है। बदलती परिस्थितियों और उनसे मिले अनुभव उसकी जीवन दृष्टि को सदैव परिवर्तित परिमार्जित और परिपक्व करते चलते हैं। साहित्यकार एक विशिष्ठ मानसिकता के साथ संसार को देखता है। अपने साहित्य को युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर उसे समय–सापेक्ष बनाता है। ऐसे कहानीकारों में मन्नू भंडारी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

पुरुष प्रधान समाज में नारी को अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है। यद्यपि नारी सृष्टि की नियामिका और पुरुष की पूरक शक्ति है। शैशव से लेकर मृत्यु तक वह किसी न किसी रूप में परिवार और समाज के शोषण का शिकार रहती है। कन्या तथा भागिनी रूप में उस माता–पिता तथा भाइयों के अनुशासन में प्रतिबन्धित जीवन जीना पड़ता है। युवावस्था में उसकी मर्यादा पति कहलाने वाले पुरूष के साथ ऐसे बांध दी जाती है कि उसकी अपनी अस्मिता ही नहीं रह जाती। उसका समस्त सुख, सौभाग्य उस तक ही सीमित हो जाता है। मन्नू भंडारी ने नारी केन्द्रित साहित्य लिखा।

उन्होंने अपनी कहानियों में जिन नारी पात्रों का चित्रण किया है वह विशेष नारी नहीं है बल्कि एक ऐसी संघर्षमयी नारी है जो समस्याओं को झेलती, कभी उनके सामने टूटती है और कभी उनको तोड़ती है। मन्नू भंडारी ने अपने कहानी संग्रह 'एक प्लेट सैलाब' में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है जिसका वर्णन इस प्रकार है, शिक्षिका रूप में मन्नू भंडारी ने कहानियों के नारी पात्रों को शिक्षिक रूप में चित्रित किया हैं। 'नई नौकरी' कहानी की नायिका रमा कॉलेज में प्राध्यापिका है। रमा नौकरी के साथ–साथ घर के कार्यों में भी व्यस्त रहती है। "तैयार होते–होते ही वह नौकर को आदेश देती जाती, सारे दिन का काम समझाती। नाश्ता करते–करते वह अपना लेक्चर तैयार करतीं तैयार तो क्या करती बस सूंघ भर लेती। फिर नौ बजे कुन्दन के साथ नितल जाती।'[1] कॉलेज जाने व घर के कार्यो के कारण उसे अपने लेक्चर तैयार करने का समय नहीं मिलता। "मन की भीतरी परतों पर हिस्ट्री के वे टॉपिक्स तैयार रहते जो उसे कल पढ़ने होते और जिन्हें वह जबरन ही दिमाग से बाहर ठेलने का प्रयास करती रहती।[2] एक बार तो वह स्वयं पेपर पढ़ने की बात कहकर टापिक तैयार करने के लिए समय नहीं निकाल पाई। उस दिन कॉलेज में रमा को एक पेपर पढ़ना था। उसने खुद ही ऑफर किया था सोचा था, इसी बहाने एक टापिक तैयार हो जाएगा, पर बिल्कुल भी तैयार नहीं कर पाई। रात में लेटी तो रोना आ गया।"[3] पढ़ाई के लिए समय न निकाल पाने के कारण उसका कर्त्तव्य बोध जागृत हो जाता है। "यह रवैया मेरे बस का नहीं है। कितना गिल्टी फील करती हूँ। बिना तैयर किए पढ़ाना, लगता है जैसे लड़कियों को चीट कर रही हूँ।"[4]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रमा नौकरी छोड़ने का फैसला करती है और अपने पति से कहती है "अब निभता नहीं, कल इस्तीफा दे दूँगी।"[5] शिक्षण कार्य से न्याय न कर पाने के कारण आत्मग्लानि से बचने के लिए रमा ने नौकरी छोड़ दी।

'बन्द दराजों के साथ कहानी में मंजरी भी कॉलेज में पढ़ाती है। विपिन से संबंध विच्छेद होने पर मंजरी अपने बेटे असित के साथ दिलीप के पास रहने लगती है और नौकरी छोड़ देती है। एक दिन जब दिलीप असित की स्कूल फीस व अधिक खर्च होने के बारे में कहता है तो "तो मंजरी को पहली बार अपनी नौकरी छोड़ने का अफसोस हुआ।"6 "एक बार और" कहानी की पात्र बिन्नी भी दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका है। "नन्दन जानता है कि वह दर्शनशास्त्र पढ़ाती है।"[7] 'कमरे कमरा कमरे' कहानी की पात्र नीलिमा भी दिल्ली के एक कॉलेज में पढ़ाती है। "चार साल में उसने पीएच.डी. की डिग्री ले लीं उसकी थीसिस़ की काफी सराहना हुई थी। अब वह यूनिवर्सिटी में होने वाले सेमिनारों में अक्सर पेपर पढ़ती थी और बहस चर्चा में खूब भाग लेती थी।"[8]

अतः कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी ने अपनी नारी पात्रों को शिक्षिका के रूप में चित्रित किया है।

कामकाजी नारी

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों को कामकाजी नारी के रूप में चित्रित किया है। 'नई नौकरी' कहानी की नारी पात्र रमा अपनी नौकरी के साथ–साथ पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहती है। 'काम की एक लिस्ट उसके पास होती, जिन्हें उसे पूरा करना होता।' काम करते मिस्त्रियों को देखना होता। मार्केट में दो एक चक्कर लगाने होते..... और यह सब करते–करते ही शाम हो जाती।"[9] अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण रमा अपनी नौकरी छोड़ देती है ताकि पारिवारिक जीवन सुखमय रहे। इसी कमरे कमरा कमरे की नारी पात्र, नीलिमा श्रीनिवास के साथ उसके फ्लैट में रहती है और उसके कार्यो में हाथ बंटवाती है। "श्रीनिवास की अनुपस्थिति में वह नियमित रूप से सवेरे से शाम तक ऑफिस में बैठती और जब घर घर भी जाती तो ऑफिस साथ ही आता था।"[10] इसी प्रकार नीलिमा श्रीनिवास की गैरमौजूदगी में इसका कार्य पर बराबर ध्यान देती है। मन्नू भंडारी ने नारी पात्र कामकाजी होने के कारण आत्मनिर्भर भी है।

अतृप्त नारी

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में अतृप्त नारी पात्रों का भी चित्रण किया हैं। "एक बार और" कहानी में कुंज और बिन्नी संबंधविच्छे के तीन साल बाद दोबार मिलते हैं। उनके विचारों में अब भी सामंजस्य नहीं है परन्तु शारीरिक भूख अब भी मौजूद है। "उन दोनों का कुछ था जो मर गया है। टूटने–मरने का यह बोध रात में और भी गहरा हो गया था, जब दो लाशों की तरह वे साथ सोए थे।"[11] कुंज और मधु का विवाह होने के बावजूद बिन्नी कुंज के पास जाती है और अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति का प्रयास करती है।

'बाहों के घेरे में' कहानी का नारी पात्र कम्मो अतृप्त है। वह बचपन से प्रेम से वंचित रही और उसकी इच्छाएं अतृप्त रही। बचपन में उसकी सौतेली माँ टुन्नी से अधिक प्रेम करती थी और उसे ही सीने से लगाए रहती। कम्मो की इच्छा थी कि "कम्मो के अबोध मन में बड़ी लालसा उठती थी कि माँ ऐसे ही उसे भी प्यार करे..... उसके गालों पर असंख्य चुम्बन बरसाए होंगे। पर उसे ऐसा कुछ भी तो याद नहीं आता।"[12] अपने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रेमी शैलेन से भी प्रेम पानी की उनकी इच्छा अधूरी रही। "तब उसका मन होता था कि शैलेन को एक छोटे बच्चे की तरह अपनी छाती में टुबका लू..... पर ये कल्पनाऐं..... ये इच्छाएं कभी उसके जीव की हकीकत नहीं बन सकी।"[13] कम्मो के प्रेम प्रसंग का पता चलने पर उसके घर वालों ने उसकी शादी मित्तल के साथ कर दी। मित्तल भी कम्मो की अतृप्त इच्छाओं को पूर्णता देने में असमर्थ रहा। "यों होने को सभी कुछ हुआ पर कम्मों ने बहसूस किया कि मित्तल बहुत बड़ है..... उसका मन विरक्ति से भर गया..... वह चुपचाप रो लेती।"[14] बचपन से युवावस्था तक कम्मों की प्रेम पाने की इच्छा अधूरी है, वह अतृप्त रही। "अकेलेपन न जीवन के इस रवैये ने उन्हें और अधिक भड़का दिया..... उसकी सम्पूर्ण पा लेने की अतृप्त दुर्दभनीय चाह एक अभिशाप की तरह उसके मन पर छाई–रहती है।"[15] 'ऊँचाई' कहानी की नारी पात्र शिवानी अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु पर पुरुष अतुल से शारीरिक संबंध बनाती है। उसका पति शिशिर उससे कहता है कि "तुम अपना शरीर तक एक पुरुष को दे आई और कैसे इतनी बड़ी बात को पचाकर बड़े स्वाभाविक ढंग से चल पड़ी।"[16] अतः कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में अतृप्त नारी पात्रों का चित्रण किया है।

उपेक्षित नारी समाज में नारी को आवश्यकता की वस्तु समझ कर व्यवहार किया जाता है। नारी से काम निकल जाने पर उसकी उपेक्षा शुरू हो जाती है। 'नई नौकरी' कहानी में रमा नौकरी करती है। थोड़े समय बाद कुन्दन की नौकरी लग जाती है। नौकरी लगते ही कुन्दन का व्यवहार बदल जाता है। अब वह रमा की नौकरी को आवश्यक नही मानता। जब रमा नौकरी छोड़ने की बात करती है तो कुन्दन कहता है कि "छोड़ो भी यार वैसे भी क्या रखा है, एशिएंट हिस्ट्री पढ़ाने में ..... कौन सी जिन्दगी हराम हो जाएगी।"[17] 'बन्द दराजों के साथ' कहानी में मंहरी व विपिन का विवाह होता है। विपिन के दूसरी महिला से संबंध हैं और वह मंतरी को इसकी उपेक्षा करता है। मंजरी को विपिन को छोड़कर दलीप के साथ रहने लगती है परन्तु मंजरी को वहाँ भी वांछित सम्मान प्राप्त नहीं होता। 'एक बार ओर' कहानी में कुंज बिन्नी एक दूसरे से प्रेम करते हैं। किसी बात पर झगड़ा होने के कारण दोनों अलग–अलग हो जाते हैं। बिन्नी से अलग होकर कुंज मधु से विवाह कर लेता है और बिन्नी की उपेक्षा करता है। शादी के बाद भी कुंज बिन्नी से सबंध रखता है परन्तु केवल शारीरिक भूख मिटाने के लिए। कह सकते हैं कि पुरुष प्रधान समाज की अवधारणा के चलते उपेक्षित होती नारी को भंडारी जी ने अपनी कहानियों की पात्र बनाया है।

आधुनिक नारी आधुनिकता के चलते समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को मन्नू भंडारी ने अपनी नारी पात्रों में दर्शाया है। मन्नू भंडारी ने नारी पात्र अपने अलग अस्तित्व के लिए प्रयासरत है। 'कमरे कमरा कमरे' कहानी की नारी पात्र नीलिमा दिल्ली आकर आधुनिकता के आवरण में ढल जाती है। वह श्रीनिवास के फ्लेट में उसके साथ रहती है, बिना विवाह किए। वह सामाजिक संस्कारों व नियमों को मान्यता नहीं देती अब उसे अपने घर वालो ंपास जाना भी अच्छा नहीं लगा। "धीरे–धीरे उसे लगने लगा कि जिन सम्भावनाओं का उसे अहसास होता है..... अब घर माने के पीछे अपनेपन की भावना कम और कर्त्तव्य भावना ज्यादा रहती थी।"[18] आधुनिकता के प्रभाव के चलते नारी स्वच्छंद हो गई है। 'ऊँचाई' कहानी में शिवानी और शिशिर पति–पत्नी है। इसके बावजूद शिवानी अतुल से शारीरिक संबंध बनाती है। शिशिर को इस बात का पता चलने पर भी शिवानी पश्चाताप प्रकट नहीं और न ही अपराध–बोध से ग्रस्त होती है। वह शिशिर से कहती है "जानते हो

मैं तुमसे झूठ नहीं बोल पाऊँगी..... पर जो चीज मैं महसूस नहीं करती उसे झूठ बोलकर तुम्हारे सामने स्वीकार नहीं जाता।"[19]

शिवानी अपना अपराध भी नहीं स्वीकारती पश्चाताप तो बहुत दूर की बात है। अतः कह कहते हैं कि मन्नू भंडारी की कहानियों ने नारी पात्र आधुनिक प्रभाव से युक्त, शिक्षित, कामकाजी हैं। इकसे अतिरिक्त उन्होंने अतृप्त, अर्न्तद्वन्द्व से ग्रस्त, नारी पात्रों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

संदर्भ सूची

1. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब (नई नौकरी), पृ0 13–14
2. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब (नई नौकरी), पृ0 14
3. वही, पृ0 14
4. वही, पृ0 15
5. वही, पृ0 17
6. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब (बन्द दराजों के साथ), पृ0 31
7. वही, पृ0 76
8. वही, पृ0 120
9. वही, पृ0 10
10. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब, पृ0 124
11. वही, पृ0 64
12. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब, पृ0 102
13. वही, पृ0 113
14. वही, पृ0 108
15. वही, पृ0 102
16. वही, पृ0 136
17. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब, पृ0 102
18. मन्नू भंडारी, एक प्लेट सैलाब, पृ0 129